Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2020, VOL- 8/61

सरदार पटेल : महात्मा गाँधी एवं जवाहरलाल नेहरू के साथ संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

जनक सिंह मीना, Ph. D.

सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

Abstract

सरदार वल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व एवं विचारों के आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे एक सरल स्वभाव के सुलझे हुए इंसान थे जो सदैव दूसरों की सेवा एवं मदद करने को आतुर रहते थे। उमके अंदर अहंकार एवं घमण्ड नाममात्र को भी नहीं था। वे सदैव आगे आकर निस्वार्थभाव से काम करने में विश्वास करते थे। हालाकि उन पर कुछ निराधार आरोप लगाए जाते रहे हैं परन्तु उनमें यथार्थता कम और राजनीति का पुट अधिक है। अतः पटेल के विचार और संबंध दोनों ही मधुर, मजबूत एवं अटल रहे हैं। चूंकि पटेल में राश्ट्रीयता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी अतः वे राश्ट्रहित के मुद्दों को बडी गम्भीरता से लेते थे और त्याग एवं समर्पितभावना से आगे बढते थे। गाँधीजी एवं नेहरू जी के साथ उनके संबंध व्यक्तिगत रूप से सौहार्द्रपूर्ण रहे परन्तु पटेल ने कभी अन्धानुकरण नहीं किया। वे सदैव तर्क एवं परिस्थितियों के अनुसार ही निर्णय करते थे। सरदार पटेल ने गाँधीवाद से प्रभावित होकर ही सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था। वे नेहरूजी एवं गाँधीजी का बडा आदर एवं सत्कार करते थे परन्तु विचारों में मैतक्यता के साथ मतभेद भी व्यक्त करने में संकोच नहीं करते थे, इसके उपरान्त भी वे मनभेद कभी नहीं रखते थे।

मुख्य शब्द : *स्वभाव, राश्ट्रीयता, गाँधीवाद, अन्धानुकरण, समकालीन , मनभेद, ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति पूर्व में घटित घटनाओं, तथ्यों एवं सूचनाओं को क्रमबद्धता एवं तर्कसंगतता के साथ सिद्धांत निर्माण में सहायक होती है, जिससे भविष्यवाणी करने में मदद मिलती है। दूसरी ओर अध्ययन की तुलनात्मक अध्ययन पद्धति से वैज्ञानिकता आधारित तथ्य, सूचनाओं के माध्यम से नवीन ज्ञान का संचार होता है और सिद्धांत निर्माण की दिशा में मदद मिलती है। उक्त दोनों अध्ययन पद्धतियाँ सरदार पटेल के संदर्भ में भी सटीक बैठती हैं। प्रथमतः हम सरदार पटेल के प्रारम्भिक काल यानी बचपन, प्रौढ़, युवावस्था तथा वृद्धावस्था तक के जीवन, व्यक्तित्व, व्यवहार, कार्यशैली, समकालीन व्यक्तित्व, मित्र, सहकर्मी, काल एवं परिस्थितियों के माध्यम से ऐतिहासिक अध्ययन

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पद्धति का सहारा लेकर उनके संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है। द्वितीय प्रकार में हम सरदार पटेल के विचारों, विशेषताओं, व्यवहार, सिद्धांत आदि का दूसरे व्यक्तियों के साथ तुलना करके विश्लेषण कर सकते हैं, अतः यह तुलनात्मक अध्ययन पद्धति है। सर्वप्रथम हम यहाँ यह जानने का प्रयास करते हैं कि सरदार पटेल के समकालीन व्यक्ति कौन रहे हैं? सरदार के समकालीनों की वैसे तो एक लम्बी सूची है या यों कहें कि उनके समकालीनों की सूची तैयार करना आसान नहीं है परन्तु यहाँ प्रमुख समकालीन व्यक्तियों का उल्लेख किया जा रहा है जिनमें हैं– एम.एस. अणे–कांग्रेस के नेता, अनुग्रह नारायण सिंह–बिहार के भूतपूर्व वित्तमंत्री, शेख मोहम्मद अब्दुल्ला–क मीर घाटी के नेता, राजकुमारी अमृतकौर–नेहरू मंत्रिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री, एन.गोपालस्वामी अय्यंगर–नेहरू मंत्रिमंडल के मंत्री, यावर जंग अली–निजाम के शासन में हैदराबाद के एक मंत्री, सर क्लॉड आचिन लेक–1941 में भारत के प्रधान सेनापति, मौलाना अबुल कलाम आजाद–1939–46 कांग्रेस अध्यक्ष, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर–नेहरू मंत्रिमंडल में विधि मंत्री, ए.वी. एलेक्जेन्डर–कैबिनेट मि ान 1946 के सदस्य, के.एम. करिअप्पा–1949–53 भारतीय सेना के प्रधान सेनापति, सर स्टेफोर्ड क्रिप्स–कैबिनेट मि ान 1946 के सदस्य, अब्दुल गफ्फार खान–सीमाप्रांत के गांधी, लियाकत अली खान–विभाजन के बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री, इंदिरा गांधी–भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री, वी.वी. गिरि–भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जयप्रकाश नारायण–समाजवादी पार्टी के संस्थापक, जाकिर हुसैन–शिक्षा ाास्त्री एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति, मौहम्मद अली जिन्ना–विभाजन के बाद पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल, पुरूषोत्तमदास टंडन–1950 में कांग्रेस अध्यक्ष, मोरारजी देसाई–कांग्रेसी नेता, गुलजारीलाल नंदा–बम्बई प्रांत के मंत्री(1946–50), सरोजनी नायडू–उत्तरप्रदेश की भूतपूर्व राज्यपाल, के.सी. नियोगी–नेहरू मंत्रीमंडल के मंत्री, जवाहर लाल नेहरू–भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, मणिबहन पटेल–सरदार पटेल की पुत्री, गोविंदवल्लभ पंत–उत्तर प्रदेश कांग्रेस नेता, सुभाषचंद्र बोस(नेताजी)–आजाद हिंद सरकार तथा फौज के मुखिया, गोकुलभाई भट्ट–राजस्थान कांग्रेसी नेता, विनोबा भावे–गांधीवादी नेता, लॉर्ड माउंटबेटन–भारत के वायसरॉय तथा गवर्नर जनरल, जी.वी. मांवलकर–कांग्रेसी नेता, के.एम. मुंशी–नेहरू मंत्रिमंडल में मंत्री, श्यामाप्रसाद मुखर्जी–हिन्दु महासभा के नेता, वी.के. कृष्ण मेनन–नेहरू के घनिष्ट मित्र, वी.पी. मेनन–सरदार पटेल के सचिव, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद–गांधी,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नेहरू तथा सरदार के घनिष्ट सहयोगी, भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति, लालबहादुर शास्त्री–भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, हीरालाल शास्त्री–1949 में राजस्थान के मुख्यमंत्री आदि।

उपरोक्त वर्णित सूची में उल्लेखित व्यक्तियों के व्यक्तित्व, चिंतन, दर्शन, कार्यों एवं विचारधारा के आधार पर अध्ययन की ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन पद्धतियों का उपयोग कर सरदार पटेल के संबंधों का वि लेषण कर सकते हैं। अब प्रमुख तथ्यों, सूचनाओं एवं विचारों से उनके बीच के संबंधों को रेखांकित करने का प्रयास किया है, जिसमें सरदार पटेल के संबंधों को गांधी एवं नेहरू के साथ विश्लेषित कर रहे हैं।

सरदार पटेल और महात्मा गाँधी के संबंध

भारत के इतिहास में तीन व्यक्तियों–महात्मा गाँधी, वल्लभभाई पटेल एवं जवाहरलाल नेहरू का ऐसा समावेश था जिन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए सब कुछ न्यौछावर किया। देश के तीनों ही कर्णधारों ने भारत की स्वतंत्रता और फिर उसका पुनर्निर्माण करने में अपनी महत्ती भूमिका निर्वहन की। महात्मा गाँधी का दर्शन मानवता के लिए ऐसा मार्ग था जिसका अनुसरण कर कठिन से कठिन कार्य सरल रूप में परिणत हो जाता है। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व में सफल राजनीतिक कला एवं नेतृत्व क्षमता थी जिसने पूरे देश में अमिट छाप छोड़ी। वल्लभभाई पटेल के गाँधी के सम्पर्क में आने और उनके दर्शन से प्रभावित होकर उनके सिद्धातों को अपने जीवन में उतारते गए। गाँधी ने सत्य, अहिंसा के मार्ग से जिस सत्याग्रह का पथ प्रशस्त किया उसको व्यवहार में लाने और पूरे देश में उसके आधार पर जनता को एकता की डोर में बांधने का असली कार्य सरदार पटेल ने ही किया।

इसमें कोई दोराय नहीं कि सरदार पटेल और महात्मा गाँधी के बीच संबंध निकटस्थ रहे ऐसा उनके लेखन, विचारों, भाषणों एवं पत्र व्यवहारों में मिलता है। पटेल स्वयं भी मानते थे, "गाँधीजी से मिलने से बहुत पूर्व मेरी राजनीति के प्रति रूचि थी पर उस समय भारत का कोई राजनीतिक दल मुझे आकर्षित नहीं कर सका। हाँ, आरामकुर्सी पर राजनीति बघारने वाले कई नेता मौजूद थे और बंगाल तथा महाराष्ट्र में अराजकता फैलाने वाले भी काफी क्रिया ील थे। तब गाँधी का मंच पर आगमन हुआ और उनमें मुझे वह नेता दिखाई पड़ा जिसका अनुयायी बना जा सकता था।"[1] पटेल और गाँधी के बारे में पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है–"जिस दिन से वल्लभभाई ने गाँधीवादी उपासना पद्धति, जिंदगी के गाँधीवादी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रीति–रिवाज और गाँधीजी के सिद्धांत अपनाये, तब से एक ऐसे भक्त प्रमाणित हुए, जिन्होंने कभी गाँधीजी के फैसले और राय में सन्देह नहीं किया।"[2] सरदार पटेल ने महात्मा गाँधी जी को स्वीकारा तो यह सोच समझकर कि स्वतंत्रता पाने के लिए गाँधीजी के मार्गदर्शन में काम करना उनका कर्त्तव्य है क्योंकि शांति और अहिंसा के मार्ग से स्वराज्य सिद्ध करने का रामबाण उपाय गाँधीजी ही जानते हैं।

"1918 के बाद से गाँधीजी के प्रति पूर्ण आस्था द ार्शाते हुए कहा कि मैंने अपने ऊपर ताला लगाकर चाबी महात्मा गाँधी को सौंप दी है। यद्यपि आव यक नहीं कि हर बात में विचार उनसे पूरी तरह मिलते हों, लेकिन अंत में उनका फैसला मान लेते थे। गाँधीजी को स्वीकारा तो पूरा स्वीकारा, वोटिंग के समय देखते रहते थे कि गाँधीजी का हाथ किधर उठ रहा है। गाँधीजी ने जिधर हाथ उठाया, उधर ही अपना हाथ उठाते।"[3] एस.के. पाटिल ने गाँधीजी और वल्लभभाई के पारस्परिक संबंधों के बारे में लिखा है, "जब से सरदार ने गाँधीजी का नेतृत्व स्वीकार किया, तब से वे हमे ाा गाँधीजी की इच्छा के प्रमुख प्रवर्तक रहे। यह दोनों समान व्यक्ति एक विचित्र युग्म हैं– गाँधीजी और सरदार जितने एक–दूसरे से अभिन्न हैं, उतने ही परस्पर एक दूसरे के भक्त। साधारणतया पहला व्यक्ति सोचता है और दूसरा अपनी अपूर्व प्रयोजनात्मक एकता के साथ उसे कार्यान्वित करता है।"[4] महात्मा गाँधी ने पटेल के जेल में बिताये गये दिनों को याद करते हुए 8 मई, 1933 को लिखा "मेरे जीवन में महानतम सुखों में से एक था कि मुझे सरदार के साथ जेल में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं उनके अजेय साहस तथा देश के लिए अद्वितीय प्रेम के बारे में जानता था, लेकिन उनके साथ 16 महीने का लंबा समय बिताने का सौभाग्य पहले कभी मुझे प्राप्त नहीं हुआ था। उनके अनुराग और प्रेम से मैं इतना अभिभूत हो गया कि मुझे अपनी प्रिय माँ का स्मरण हो आया। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उनमें मातृवत् स्नेह जैसे गुण मौजूद हैं।"[5] इसमें पटेल और गाँधी के आत्मीय संबंध, वि वास, सम्मान स्पष्ट झलकता है।

सरदार पटेल मानवतावादी थे लेकिन एक सीमा तक, यदि देश की अखण्डता को कोई व्यक्ति हानि पहुँचाये या किसी व्यक्ति से किसी समुदाय को हानि होती हो तो सरदार एक सीमा के बाद उस व्यक्ति से दृढ़ता से पेश आते थे। ऐसा भी नहीं है कि सरदार पटेल आँखे मूंद कर बिना सोच विचार किए हुए गाँधीजी की सभी बातों पर सहमति व्यक्त करते

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

थे। 1940 के आसपास पटेल और गाँधी के बीच कुछ मतभेद भी देखने को मिले– द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश शासन भारतीय जनसहयोग चाहता था और गाँधीजी इसके पक्ष में थे परन्तु सरदार पटेल इसके विरोध में थे और उन्होंने गाँधीजी को लिखा–"मैं आपकी आज्ञा या सूचना के अनुसार चलने को तैयार हूँ परन्तु आप यह कहें कि इस विषय में मुझे अपनी मान्यता के अनुसार आचरण करना चाहिए तो मैं यह मानता हूँ कि युद्ध पूरा होने के बाद भारत को पूर्ण स्वतंत्रता देने की शर्त पर अंग्रेज सरकार की सहायता करने में मेरे किसी व्रत का भंग नहीं होता।"[6] दूसरा उदाहरण क मीर पर पाकिस्तान के आक्रमण के बाद भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान को 55 करोड़ रूपये की रकम पर गाँधीजी और पटेल के बीच मतभेद थे जिसे 15 फरवरी 1948 को सरदार ने कहा कि– "मैंने इस बात पर बल दिया कि पाकिस्तान के साथ सारे समझौते एक साथ तय करके सभी मामले सुलझाये जायें। मैं इस बात पर कभी सहमत नहीं हो सकता था, कि लाभ सब उनको मिलें किन्तु घाटा हमारे सिर लादा जाये। पटेल का अधिक विरोध इस कारण भी था कि पाकिस्तान इस रूपये का प्रयोग भारत के विरूद्ध क मीर में करेगा लेकिन गाँधीजी ने उसके विरूद्ध सत्याग्रह कर दिया जिसके परिणामस्वरूप दे ा में गम्भीरता पैदा हो गयी, अतः सरकार ने वह रूपया देने का निर्णय किया। सरदार ने दिल से कभी इस कार्य की सहमति नहीं दी।"[7]

23 नवंबर 1921 को गृह विभाग (वि ोष) एफ संख्या 554/1921–22 बंबई पुरातन से प्रांत जानकारी के आधार पर सरदार पटेल ने गाँधीजी के सत्याग्रह स्थगित करने के कदम का विरोध जो इस प्रकार है– गाँधीजी ने प्रस्ताव किया कि सविनय अवज्ञा स्थगित किया जाना चाहिए। वल्लभभाई पटेल, एन.सी. केलकर, कोंडा वेंकटापैया और वी. जे.पटेल स्थगन के विरूद्ध थे और उनका कहना था कि गाँधीजी को कार्य समिति की सलाह लिये बिना सविनय अवज्ञा को स्थगित करने की घोषणा समाचार पत्रों द्वारा करने का अधिकार नहीं था।.....[8]

19 जुलाई 1940 को गुजरात प्रांतीय समिति के समक्ष अहिंसा के प्र न पर पटेल ने अपनी मन स्थिति का वर्णन करते हुए कहा था,–" मौजूदा परिस्थिति में अहिंसा का सम्पूर्ण प्रयोग करना कांग्रेस के लिए संभव नहीं। हमारी शक्ति के अंदाज के बारे में गांधीजी और हमारे बीच मतभेद हैं। समाज पर अत्याचार करने वालों के साथ आव यक हिंसा का

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इस्तेमाल किए बिना काम चल सकता मेरी बुद्धि के बाहर है। वल्लभभाई पटेल की गाँधीजी के प्रति वास्तविक श्रद्धा थी लेकिन यह उसी प्रकार थी जिस प्रकार एक व्यावहारिक और यथार्थवादी मनुष्य की एक आदर्शवादी के प्रति होती है। हम कह सकते हैं कि गाँधी और पटेल के संबंध गुरू–शिष्य की तरह अव य थे परन्तु अन्धानुकरण प्रवृत्ति नहीं थी। पटेल ने गांधीजी के सत्य, अहिंसा सत्याग्रह में पूर्ण वि वास किया लेकिन गांधी महात्मा थे और पटेल भारत के सरदार अतः जहाँ तक संभव होता पटेल महात्माजी के सिद्धांतों का पालन करते अन्यथा स्वयं निर्णय लेते और कहते कि गाँधीजी पूर्णतया सिद्धांतवान हैं और उसी के अनुसार वे व्यवहार करते थे। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि गाँधीजी और पटेल के बीच मतभेद हो सकते हैं परन्तु कभी मनभेद नहीं रहे।

वल्लभभाई पटेल और जवाहरलाल नेहरू के बीच संबंध

सरदार पटेल और नेहरू की प्रकृति में असमानता थी, एक ओर पटेल एक साधारण किसान परिवार से ग्रामीण परिवेश में पले बडे हुए, वहीं नेहरू को पारिवारिक विरासत का धनी कहा जा सकता है। व्यक्ति अपनी प्रकृति का अनुसरण करके ही कार्य कर सकता है। ऐसा प्रतीत होता है पटेल और नेहरू दोनों के लिए मार्गदर्शी महात्मा गाँधी ही थे और जो कुछ सामंजस्य या वैचारिकता का आदान–प्रदान रहता उसमें उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी, क्योंकि महात्मा गाँधी समय की नजाकत को पहले ही भांप लेते थे। सरदार पटेल भी ऐसा कोई कार्य नहीं करते थे जिससे गाँधीजी को ठेस पहुँचे परन्तु जब मामला राष्ट्रहित का होता या भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए मत भिन्न होता तो वे गाँधीजी को इससे सचेत करते थे और आव यकता होने पर विरोध भी जताते थे। पटेल और नेहरू दोनों को ही आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है और दोनों में अनेक समानताओं के होते हुए भी वैचारिक भिन्नता थी। दोनों में ही राष्ट्र भक्ति, नेतृत्व क्षमता, आदर्शों के प्रति आस्था थी। डॉ. बी.के. केसकर ने कहा था–"नेहरू और पटेल दो विरोधी तत्वों का एक ऐसा मिश्रण थे, जो एक–दूसरे के पूरक थे।"[9] नेहरू की विचारधारा साम्यवाद से प्रभावित थी जबकि पटेल ने किसी भी विचारधारा को अपने पर हावी नहीं होने दिया। इन विपरीत स्वभावों से जुड़ी दोनों धुरियों को महात्मा गाँधी ने एक साथ बांधे रखने का कार्य किया था। हालाकि सरदार पटेल और नेहरू दोनों का सपना एक मजबूत भारत का निर्माण करना था परन्तु पटेल वास्तविक

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण से समस्या पर विचार करते थे और प्रत्येक समस्या के भविष्य के परिणामों का अंदाजा लगा लेते थे। उदाहरण के तौर पर जूनागढ़ और हैदराबाद के मामले में पटेल ने नेहरू की इच्छा के विरूद्ध जाकर कार्यवाही की और भारत में मिला लिया। क मीर के मामले में नेहरू ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति के कारण बिना पटेल से विचार विमर्श किए समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले गए जिसके पटेल सख्त विरोधी रहे और समस्या आज तक बनी हुई है। इसी प्रकार चीन की मित्रता पर भी पटेल ने कभी विश्वास नहीं किया बल्कि संभावित खतरों की ओर पहले ही ईशारा कर दिया था। नेहरू ने 1 अगस्त 1947 को सरदार पटेल को एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने लिखा कि मैं आपको मंत्रिमंडल में सम्मिलित होने का निमंत्रण देने के लिए लिख रहा हूँ। इस पत्र का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि आप तो मंत्रिमंडल के सुदृढ़ स्तम्भ हैं। इसी के उत्तर में पटेल ने नेहरू को लिखा कि एक अगस्त के पत्र के लिए धन्यवाद। एक–दूसरे के प्रति हमारा जो अनुराग व प्रेम रहा है तथा 30 वर्ष की हमारी जो अखंड मित्रता है, उसे देखते हुए औपचारिकता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। आ ा है कि मेरी सेवाएं बाकी के जीवन के लिए आपके अधीन रहेंगी। आपको इस ध्येय की सिद्धि के लिए मेरी संपूर्ण वफादारी और निष्ठा प्राप्त होगी, जिसके लिए आपके जैसा त्याग और बलिदान भारत के अन्य किसी ने नहीं किया है। आपने अपने पत्र में मेरे लिए जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उसके लिए में आपका कृतज्ञ हूँ।

सरदार पटेल वचन के पक्के तथा सहयोग से काम करने वाले व्यक्ति थे जबकि जवाहरलाल नेहरू महत्वाकांक्षी अधिक थे लेकिन महत्वाकांक्षी होते हुए भी पटेल की योग्यता पर पूर्ण वि वासी थे। गाँधीजी की मृत्यु उपरांत 3 फरवरी 1948 को पं. नेहरू ने पटेल को लिखा–"बापू की अन्तिम अभिलाषा यह थी हम दोनों ने अब तक जिस तरह कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है, उसी तरह आगे भी करते रहें। हमारे मतभेदों में से भी हमारे बीच महत्व के विषयों में जो मतैक्य है, वह स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है और उसी में से एक दूसरे के प्रति हमारा आदर भाव भी प्रकट हुआ है।"[10]

निष्कर्ष

सार रूप से कहा जा सकता है कि पटेल और नेहरू के बीच संबंध मिश्रित रहे परन्तु उनके विचारों में एकता, सौहार्द के साथ मतभेद भी थे। पटेल ने कभी मतभेदों को छुपाया

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं अपितु खुलकर नेहरूजी के सामने रखा और न ही कभी मनमुटाव रखा क्योंकि उनके मन में किसी प्रकार का दुराव या वैमनस्य नहीं रहा। इससे स्पष्ट है कि दोनों के संबंध मैत्रीपूर्ण रहे और मतभेद तो रहे परन्तु कभी मनभेद नहीं होने दिए।

संदर्भ सूची

शरद सिंह, सरदार वल्लभभाई पटेल, सामयिक प्रकाभान, नई दिल्ली, 2016, पृ.189–190

पट्टामि सीतारमैय्या, सचमुच एक सरदार, पटेल अभिनंदन ग्रन्थ, पृ 9

साक्षात्कार माननीय मोरारजी देसाई भूतपूर्व प्रधानमंत्री, बम्बई, 12 अगस्त 1985

पूर्वोक्त, शरद सिंह, पृ.190

पी.एन.चौपड़ा, व प्रभा चौपड़ा(सं), सरदार पटेल, गाँधी, नेहरू एवं सुभाष, प्रभात प्रकाभान, दिल्ली 206 पृ.131

रवीन्द्र कुमार, सरदार वल्लभभाई पटेल के सामाजिक व राजनीतिक विचार, मित्तल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1991, पृ.169

उपरोक्त, पृ 169

पूर्वोक्त, पी.एन. चौपड़ा व प्रभा चौपड़ा, पृ.155

पूर्वोक्त, शरद सिंह, पृ.202

पूर्वोक्त, रवीन्द्र कुमार, पृ. 173

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies